आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 352 ARYA SABHA MAURITIUS *24th Jan. to 11th Feb. 2017*

LET US
LOOK AT
EVERYONE
WITH A
FRIENDLY
EYE
- VEDA

नमस्कार मन्त्रः

Namaskāra Mantrah

**ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय चे ।।**

यजु० १६/४२ ।।

Om namaḥ śambhavāya cha mayōbhavāya cha namaḥ śankarāya cha mayaskaraya cha namah śivāya cha śivatarāya cha.

***Meaning of words :-* namaḥ** - salutations to, **śambhavāya** - All peace, **cha** – and, **mayōbhava** - All-bliss, **Shankara** - All-benevolent, **mayaskara** - Giver of all happiness, **Shiva** - All-auspiciousness and, **śivatarāya** - the most Auspicious Being.

Purport :- *My salutations to the Lord who is Eternal bliss and the source of peace. My salutations to the Benefactor of all and the bestower of blessings. O Giver of all prosperity, happiness and peace we offer You our salutations - You are Shiva - the auspicious one. We surrender ourselves to you.*

Dr O.N. Gangoo

एक आध्यात्मिक यात्रा

डॉ० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के., आर्य रत्न

यात्राएँ अनेक प्रकार की होती हैं, जैसे व्यावसायिक यात्रा, पर्यटन सम्बन्धी यात्रा, तीर्थ यात्रा इत्यादि। पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी महाराज आचार्यद्वय – श्री यज्ञवीर, श्री योगेश और ब्रह्मचारी निखिल जी के साथ दस दिनों की यात्रा पर मॉरीशस पधारे। वे मात्र मॉरीशस-दर्शन की इच्छा से यहाँ आये थे। किन्तु इस रमणीक द्वीप में पग धरने पर उन्हें इसके दर्शन का समय कम और यहाँ के आर्य समाजों में आध्यात्मिक प्रवचन देने में अधिक समय व्यतीत करना पड़ा। स्वामी प्रणवानन्द जी की यात्रा एक आध्यात्मिक यात्रा बनकर रह गई। स्वामी जी महाराज 'श्रीमद्यानन्द वेदार्ष महाविद्यालय' के अधिष्ठाता हैं और इस समय उनकी देख-रेख में भारत के विभिन्न प्रान्तों में आठ गुरुकुलों का संचालन हो रहा है।

इतिहास साक्षी है कि स्वामी मंगलानन्द पुरी जी भारत से मॉरीशस पधारे प्रथम संन्यासी थे, जो सन् १९१२ में देशाटन की अभिलाषा से आये थे। भारत लौटने के बाद उन्होंने अपना खट्टा-मीठा अनुभव व्यक्त करते हुए अपना यात्रा-वृत्तान्त 'मर्यादा' पत्रिका में प्रकाशित किया। इस यात्रा-वृत्तान्त को प्राप्त करने के लिए श्री प्रह्लाद रामशरण जी को कलकत्ता की यात्रा करके वहाँ के 'बड़ा बाज़ार पुस्तकालय' से सम्पर्क करना पड़ा। स्वामी मंगलानन्द पुरी जी लिखते हैं -

"........... इस टापू के कई स्थानों पर रेल द्वारा मैं घूम चुका हूँ, यहाँ की प्राकृतिक शोभा अति मनोहर है। जिधर देखो पहाड़ ही पहाड़ देख पड़ते हैं, पर वे निस्सन्देह वृक्षों, पौधों, जड़ी-बूटियों, फल-फूलों इत्यादि से ऐसे भरे हैं कि मानो प्रकृति ने इन्हें हरी चादर उढ़ा रक्खी है। पहाड़ी, झरने और नदियाँ बड़े स्वच्छ निर्मल जल को बहाये समुद्र की ओर चली जाती हैं। सारा टापू गन्ने के खेतों से भरा पड़ा है। खेती यहाँ गन्ने ही की होती है, दूसरी किसी वस्तु (गेहूँ या रुई इत्यादि) की खेती नहीं होती। इसका कारण मैंने पूछा तो यह बतलाया गया कि वर्षा की अधिकता से और वर्ष के अन्य सारे ही ऋतुओं में वर्षा न्यूनाधिक होती रहने से दूसरी कोई वस्तु नहीं उपज सकती। अनेक बार इसकी परीक्षाएँ की गईं। अतः हम जिस प्रकार ज़ंजिबार को लवंग का टापू कह सकते हैं उसी प्रकार इस मिरिच को यदि गन्ना या शक्कर (चीनी) का टापू कह दें तो अनुचित न होगा; यद्यपि जहाँ ज़ंजिबार को परमात्मा ने ही लवंग की वाटिका बना रक्खी है, वहाँ इस मिरिच को उसके बन्दों ने उसकी कृपा से, गन्ना का क्षेत्र बना पाया।

यहाँ भी आम का मधुर फल ज़ंजिबार के सदृश साल में ८ या ९ महीने पाया जाता है। जनवरी (पौष, माघ) में आम खाना भारत में असम्भव है, पर मैं जिस दिन उतरा, उसी दिन मुझे आम का स्वाद चखाया गया ।

भारतीय सर्वप्रकार की शाक-भाजी तरकारियाँ – आलू, गोभी, भिंडी, अरवी, बैंगन, करैला इत्यादि, तथा अनके फल – अमरूद, निम्बू, केला, शरीफ़ा इत्यादि, सभी यहाँ मिलते हैं – कई भारत से सस्ते और कई कुछ महेंगे।

पाठकगण! साधारणतः आपको मैंने मिरिच टापू की सैर करा दी। हाँ, अभी अपने देशियों का वृत्तान्त सुनाना बाकी; पर क्या कहूँ? मैं तो इनके हालात देखकर तथा भारत का मॉरिशस से सम्बन्ध विचार कर कभी रोता हूँ और कभी हँसता भी हूँ। अच्छा, आइये आप प्रथम मेरे साथ रो लीजिये फिर कुछ हँस भी लीजियेगा।

साठ, सत्तर, अस्सी-अस्सी वर्ष के बूढ़े हिन्दू यहाँ मुझे मिले और उनके आगमन का वृत्तान्त सुना तो यह ज्ञात हुआ कि सौ में से अस्सी की ऐसी दशा है कि वे केवल धोखे से लाये गये हैं। कलकत्ता तथा अन्य नगरों में कुलियों को भेजने के आफ़िस बने हैं। उनके कार्यकर्ता अनेक छलबल से काम लेते हैं। मैं यहाँ पर एक-दो के वृत्तान्त लिखता पर दैवयोग से इन्हीं दिनों भारतीय समाचार-पत्रों में कानपुर के डीपू में दो अच्छे घराने की लड़कियों को फुसलाकर रख लेने का एक मुकदमा किसी न्यायालय में होने की बात पढ़ी है, सो पाठक सोच लें कि यहाँ जितने आये हैं, उन सबको नहीं, तो सौ में अस्सी को ऐसे ही धोखे दिये गये होंगे। यह कुली भरती करने का मुहकमा भारत में खोलना ही सरकार की भूल थी। अब तो मॉरिशस, नेटाल इत्यादि कई देशों में कुली भेजना बन्द हो गया, पर निस्सन्देह भारतीय

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

हार-जीत की दौड़

जीवन की दौड़ में निरन्तर हार-जीत होती रहती है। जो भाग्यशाली होता है, वह विजयी होता जाता है और जो अभागा होता है, उसकी हार होती रहती है।

हार-जीत की दौड़ तो बचपन ही से शुरू हो जाती है। बच्चे ज्योंहि खेल-कूद करने लगते हैं, त्योंहि अपने क्रीड़ा स्थल पर जीतने की ताक में रहते हैं। वे अपनी ताकत लगाकर जीतने की कोशिश करते हैं। खेल की प्रतियोगिता में विजयी बच्चे अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हैं, और जो हार जाते हैं, वे उदास होकर रह जाते हैं। जीतने वालों की प्रशंसा की जाती है और हारे हुए खिलाड़ियों को सान्त्वना दी जाती है।

विद्यालय में पदार्पण करते ही सभी छात्र शैक्षिक क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त करने की दौड़ लगाते रहते हैं। त्यागी, मेहनती और बुद्धिजीवी विद्यार्थी अपनी परीक्षा में उत्तीर्ण होकर मान-सम्मान प्राप्त करते हैं और आलसी, प्रमादी, अल्पज्ञानी छात्र परीक्षा में अनुतीर्ण होकर निराश हो जाते हैं। इसी प्रकार हमारे विद्यार्थी कई प्रकार के खेलों और प्रतियोगिताओं में भाग लेकर हार-जीत के चक्कर में फँसे रहते हैं।

किशोरावस्था में कदम रखते ही जवानों को कई प्रकार के खेलों में तथा प्रतियोगिताओं में भाग लेने का सुनहरा मौका मिलता रहता है। सौभाग्य से अगर उन्हें सत्संग में जाकर अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल जाता है तो वे सदाचारी बनकर सही मार्ग पर अग्रसर होते हुए जीवन की दौड़ में आगे बढ़ते जाते हैं और दुर्भाग्य से अगर कुसंग में पड़ जाते हैं तो अपने बुरे कर्मों और अभद्र व्यवहारों के कारण हारे हुए जवान नज़र आते हैं। उनकी प्रशंसा कोई नहीं करता, वे सर्वत्र निन्दित होते हैं ।

युवक-युवती को गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करते ही सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने की ज़रूरत होती है। हर एक गृहस्थी यह चाहता है कि उसका परिवार सुख-समृद्धि की ओर बढ़ता रहे। वह जीवन की हर मोड़ में उन्नति करे फिर भी सभी का जीवन उन्नत नहीं होता है, कोई आगे बढ़ जाता है और कोई पीछे रह जाता है।

समाज से अलग हम नहीं रह सकते हैं। बच्चे जवान वयस्क, वृद्धजन सभी का सम्बन्ध अपने समाज से रहता है। सामाजिक संस्था में भी पद्योन्नति प्राप्त करने की दौड़ लगी रहती है। समाज में उच्चे पद प्राप्त करने में निस्वार्थ समाज सेवियों की जीत होती है और स्वार्थी तथा अयोग्य जनों की हार होती रहती है। सभी चरित्रवान, पुरुषार्थी, कर्मठ समाज सेवी का मान-सम्मान बढ़ता जाता है और अन्य लोग उच्च पद प्राप्त करने का अवसर खोजते रहते हैं।

राजनीति के क्षेत्र में रुचि दिखाने वाले राजनीतिज्ञ भी आम चुनाव में भाग लेते हैं और उस दौड़ में देश-हितैषी तथा नागरिकों के हक में कार्य करने वालों की जीत होती है। उधर मतदाताओं को ठगने वाले उम्मेदवारों की हार निश्चित होती है। इसी प्रकार विजयी देश भक्त सत्ताधिकारियों की प्रसिद्धि बढ़ती जाती है और स्वार्थी राजनेता निन्दनीय होते हैं, वे राजनीति के मैदान में चुनाव हारते रहते हैं।

सज्जन, चरित्रवान्, परोपकारी, देश-प्रेमी, धार्मिक, सामाजिक पुरुषार्थी और तपस्वी होना मनुष्य का सर्वोत्तम गुण है। जिस व्यक्ति में ये सारे गुण होते हैं, वे जीवन भर विजयी होते जाते हैं और जो दुर्जन, चरित्र हीन, अपकारी, अधर्मी, आलसी, प्रमादी होते हैं। उनका जीवन असफल दिखाई देता है।

अपने भाग्य के विधाता स्वयं हम हैं। अपने अनमोल जीवन को विजय के मार्ग पर ले जाने वाले हम ही हैं और पराजय की दिशा में पहुँचाने वाले हम ही हैं। इसीलिए हमें सदा अच्छे गुण-कर्मों से भरपूर जीवन व्यतीत करना चाहिए, ताकि ज़िन्दगी भर हम हर एक क्षेत्र में जीत का आनंद प्राप्त करते रहे। हार-जीत की दौड़ में जो व्यक्ति अपनी बुद्धिमता, योग्यता, कुशलता और शिष्टता आदि सद्गुणों से विजयी होता जाता है, मृत्यु के बाद भी सभी लोग उनके जीवन से प्रेरित होकर उनका गुणगान करते रहते हैं। उधर जीवन की दौड़ में सदा पराजित होने वालों का नामोनिशान शीघ्र ही मिट जाता है। अतः हमें निरन्तर विजयी होने का प्रयत्न करना चाहिए।

बालचन्द तानाकूर

गुरुकुल में अंग्रेज़ों का आगमन

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा

उपनिवेशों में राजभक्त होना जायज़ है, ज्योंही देश भक्त की प्रवृत्ति अपनाएँगे तो पूरे राज्य की पैनी दृष्टि में आ जायेंगे भारत में और अन्यत्र देशों में यही हाल रहा पूरे औपनिवेशिक काल के अन्तर्गत।

इतिहास के पन्ने पलटते हैं तो देखने में यह बात आती है कि सुभाष चन्द्रबोस के पिता जी राजभक्त थे जब नेता जी देश को अंग्रेज़ों के चंगुल से छुड़ाने के लिए आज़ाद हिन्द फ़ौज स्थापित की तो अंग्रेज़ी राज उसके पीछे पड़ गया।

अंग्रेज़ सोचते थे कि दयानन्द को अपने हक में करके पूरे देश में भ्रमण करने के लिए ट्रेन का टिकट दे दिया जाए वशर्ते कि वे उनका काम करेंगे। लेकिन जब स्वामी जी ने संध्या के मंत्रों का चयन करते हुए उद्धृत किया – **'अदीना स्याम शरदः शतं ...'** तो अंग्रेज़ और उनके पिट्ठुओं को साफ़ दिखाई देने लगा कि स्वामी जी बिकाव नहीं हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द ने जब गंगा किनारे १९०२ में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की और पुरानी आर्य शिक्षण पद्धति को जारी किया तो अंग्रेज़ों ने उनपर पैनी दृष्टि रखना आरम्भ कर दिया। एक वक्त ऐसा आया कि संशय होने लगा और कहा जाने भी लगा कि गुरुकुल में स्वतन्त्रता आन्दोलन को उग्र रूप प्रदान करने के लिए अस्त्रार्थ की तैयारी हो रही थी। यहाँ तक नौबत आयी कि पंजाब प्रान्त के लाट (गोवर्नर) सर जेम्स मेस्टन ने स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा दी गई दावत को स्वीकारा और बड़े धूम-धाम से गुरुकुल दर्शनार्थ पधारे जिनका शानदार स्वागत किया गया। उद्देश्य दूसरा था पर उन्होंने गुरुकुल के कार्यों को सराहा और प्रशंसा भरे शब्द भी कहे और स्वामी जी के प्रति भक्ति भाव भी प्रकट किया। जाते हुए सर जेम्स ने इशारा किया था कि क्यों न तत्कालीन वायसरोय (Vice Roy) को गुरुकुल दर्शन के लिए आमंत्रित किया जाय। वे शिक्षा प्रेमी होने के कारण आना पसन्द करेंगे। संकेत को स्वामी जी समझ गए थे। उन्होंने वायसरोय लोर्ड चेम्सफोर्ड को आमंत्रित किया। तुरन्त आमन्त्रण को स्वीकार कर लिया गया और निश्चित दिन और समय पर लोर्ड चम्कोर्ड अपनी लेडी, पंजाब के गोवर्नर और पूरे-राजकीय काफिला सहित आ पधारे। ऐसी घटना पहली बार परतन्त्र भारत में एक शिक्षा संस्थान को लेकर घटी थी। गुरुकुल की ओर से उनका हार्दिक स्वागत किया गया। संस्कृत में अभिनंदन पत्र पेश किया गया। सम्मान के उत्तर में आपने गुरुकुल के आदर्शों की और गुरुकुल संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व की भूरि-भूरि प्रशंसा की ।

याद रहे कि गुरुकुल की व्यवस्था में सरकार की ओर से कोई आर्थिक सहायता नहीं मिलती थी। अंग्रेज़ चाहते थे कि गुरुकुल को आर्थिक सहायता पहुँचाकर उसे अपने अधिकार में कर लिया जाए। पर स्वामी जी ने सहर्ष आमंत्रित किया था। बदले में सरकार की ओर से किसी प्रकार की सहायता प्राप्त करने के लिए नहीं, वरन उस शंका-व संदेह को निर्मूल करने के लिए जिससे अंग्रेज़ों का दिलो-दिमाग ग्रस्त था। यह थी स्वामी श्रद्धानन्द जी की दूर्दशिता ।

Donors of Brahmashram Arsha Gurukul

Receipt no. 9101 - Shri Ravind Seetul ji - Rs 1000/-
9103 - Vacoas Arya Samaj - Rs 1500/-
9104 - Shri Videsh Bissoonauth ji - Rs 5000/-

We express our sincere thanks to the donors for their generosity.

Pt. Kaviraj Khedoo

Insights and Incentives to lead a better life

Sookraj Bissessur, B.A, Hons.

The world would have been a far better place to live in, if all people would have been able to justify their anger because - Anger leads to restlessness.

Modern man has no time to stand and stare at nature. Why?

Marriage must always be treated as a very serious sacred institution and not as a mere pass time.

Young people should never be afraid of the impending future.

We should always draw good lessons from our past mistakes as well as past experiences.

Kindness gives birth to kindness.

Esteem is the harvest of a whole life time spent in usefulness.

A person who reads is worth ten.

Wit is always superior to brute force.

Books open the world.

Read neither to contradict nor to refute, nor to take for granted, but to weigh and consider. (Francis Beacon, Essayist)

The hall mark of an educated person is humility.

If you study to remember you will forget, but if you study to understand, you will remember.

When wealth is lost, nothing is lost. When health is lost, something is lost. When character is, lost everything is lost.

The caste of a person is determined neither by his/her birth, nor by his qualifications but by his actions. *(Maharshi Dayanand Saraswati)*

पृष्ठ १ का शेष भाग

गवर्नमेंट को उचित है कि इस मुहकमे को तोड़ दे। जिन्हें आदमी की दरकार हो समाचार-पत्रों में विज्ञापन दें और पूरा वेतन देकर उन्हें प्राप्त करें; जो प्रसन्नतापूर्वक जाना चाहें भेजे जाएँ।

यह तो हुआ इन भारतीय कुलियों पर दूसरों का अत्याचार। परन्तु इनके निज के कृत्य अर्थात् इनकी सामाजिक, आत्मिक, सदाचारिक (Moral) और धार्मिक दशा जैसी कुछ मैं पाता हूँ, वह अत्यन्त शोचनीय है।

यहाँ पूर्वकाल में फ्रेंच का राज्य होने के कारण इस देश की भाषा एक बिगड़ी हुई फ्रेंच ज़बान है जिसे 'किरोल' कहा जाता है सो प्रायः ९० प्रति सैंकड़ा यहाँ के जन्मे हुए भारतवासी केवल इसी किरोल भाषा को जानते हैं। यही अब उनकी मातृभाषा है। उनके लिए हिन्दी वैसी ही कठिन और अपरिचित है, जैसे हम लोगों के लिए अंग्रेज़ी इत्यादि।

हाँ ! क्या इससे बढ़ कर शोक का विषय हो सकता है कि आज ये मिरिच देश में आने वाले हिन्दू अपनी हिन्दी मातृभाषा ही को भूल गये । किसी जाति की जातीयता उसकी एक मातृभाषा होने के द्वारा संसार में विद्यमान रह सकती है। जब वही न रह गई तो मुझे कैसे सन्तोष हो? जिस हिन्दी को भारत की राष्ट्र भाषा बनाने का हम प्रयत्न कर रहे हैं, उसे उसके केन्द्र स्थान-काशी प्रयाग आदि के निवासी यहाँ आकर भूल गये। क्या यह महाशोक की बात नहीं है।

हिन्दी भाषा तो इस प्रकार काफ़ूर हुई। केवल कथन मात्र के लिए एक सहारा था कि अच्छा क्या हुआ भाषा भूल गये तो भूल गये, पर हैं तो वे हमारे हिन्दू भाई। दूर देश में बसे रह कर धनधान्य-परिपूर्ण हैं तो परमात्मा इन्हें सुखी रखे, यथासम्भव मातृभूमि हिन्दुस्तान का प्रेम उनमें बना रहे और देश सेवा में दत्तचित्त रहें यही गनीमत है।

पर ऐसा भी नहीं है। वे हिन्दू जो यहाँ जन्मे हैं इस टापू को अपना स्वदेश और भारत को दूसरों के ही सदृश विदेश मानते हुए मुझ जैसे नये आने वाले को 'विदेशी' कहते हैं।"

उपर्युक्त पंक्तियों को पढ़कर पाठक इसी निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि स्वामी मंगलानन्द पुरी आत्मग्लानि लिए भारत लौटे। उन्होंने इस देश में हिन्दुत्व और भारतीयता को समाप्त होते पाया। उन्होंने मॉरीशस को एक नया नाम भी दिया – 'मिरिच टापू'।

स्वामी जी से कुछ ही समय पहले १५ दिसम्बर १९११ में डॉक्टर चिरंजीव भारद्वाज जी का मॉरीशस में आगमन हुआ था। १९१४ में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का इस देश में धर्म-प्रचारार्थ पदार्पण हुआ। इन दोनों भारतीय विद्वानों ने हिन्दी भाषा में प्रवचन करके हिन्दी का खूब प्रचार-प्रसार किया। कई हिन्दी पाठशालाएँ खोलीं। दो वर्ष पश्चात् अर्थात् सन् १९१६ में पंडित काशीनाथ किष्टो के भारत से उच्च शिक्षा प्राप्त करके मॉरीशस लौटने पर धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में एक जबर्दस्त क्रांति हुई। गत सौ वर्षों में आर्य समाज आन्दोलन के माध्यम से भारतीय एवं स्थानीय धर्म प्रचारकों ने स्वामी मंगलानन्द पुरी की निराशा को दूर करके सभी दृष्टियों से एक प्रगतिशील मॉरीशस के निर्माण में बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किये।

स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज का प्रवास यहाँ अत्यल्प था। इस अल्पकाल में वे मॉरीशस-दर्शन से बड़े प्रभावित हुए। यहाँ की प्राकृतिक सुषमा ने उन्हें स्वामी मंगलानन्द पुरी जी के ही समान आनन्द-विभोर कर दिया। साफ़-सुथरी सड़कें और गलियाँ देख वे अति प्रसन्न हुए। उन्होंने अपने प्रवचनों के दौरान श्रोताओं को बताया कि पहली बार सन् १९७३ में इस टापू की यात्रा की थी। वे सात सौ भारतीयों के साथ यहाँ आयोजित बारहवें अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा-सम्मेलन में भाग लेने के लिए 'अकबर' नामक पानी जहाज़ से इस धरती पर उतरे थे। लगभग साढ़े चार दशक बाद उन्हें दोबारा मॉरीशस देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हुए बताया कि इस अन्तराल में मॉरीशस ने विविध क्षेत्रों में भारी प्रगति की है। उन्होंने इस देश के शासकों और जनता के श्रम को सराहते हुए सबको बधाई दी।

स्वामी मंगलानन्द पुरी जी भी इस द्वीप के प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर अभिभूत तो हुए थे। परन्तु उन्हें बड़ा खेद इस बात से हुआ था कि इस देश में बसे भारतीय मूल के अधिकांश लोग अपनी भाषा-संस्कृति से वंचित हो गए थे। उन्होंने भारतीयता को समाप्त होते देखा था। इसलिए वे दुखी होकर स्वदेश लौटे थे।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी महाराज भी स्वामी मंगलानन्द पुरी के ही अनुरूप मॉरीशस-दर्शन की इच्छा लिए यहाँ पधारे थे। ठीक एक सौ पाँच वर्ष के पश्चात् किसी भारतीय संन्यासी ने ऐसी कामना से इस देश में पदार्पण किया। अपने अल्पकाल के प्रवास के पश्चात् उन्होंने रेडियो-टेलीविजन के अतिरिक्त आर्यसमाज के मंचों से श्रोताओं को सम्बोधित किया। पाई में स्थित 'ऋषि दयानन्द संस्थान' में आयोजित त्रिदिवसीय प्रवचनों के दौरान आर्य सभा के पंडित-पंडिताओं और अनेक शाखा-समाजों के प्रधानों, मन्त्रियों एवं अन्य अधिकारियों को अपने सारगर्भित प्रवचनों से प्रभावित किया। उनके प्रथम दिन का प्रवचन वैदिक वाङ्मय के एक संक्षिप्त परिचय पर आधारित था। उन्हें प्रश्नोत्तरों के द्वारा यह पता चला कि यहाँ वैदिक ग्रन्थों का अच्छा प्रचार हुआ है।

स्वामी जी महाराज ने अपने भाषणों में स्वामी मंगलानन्द पुरी जी द्वारा व्यक्त निराशा के स्थान पर अति संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि इस देश में हिन्दी, भारतीय संस्कृति और वैदिक धर्म की रक्षा भारत से कहीं अधिक हुई है। उन्होंने विद्या-प्रचार धर्म-प्रचार और समाज-सेवा की दिशाओं में आर्यसमाज के कार्यों को देखकर कार्य-कर्ताओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि भारत मॉरीशस का ज्येष्ठ भ्राता है और मॉरीशस भारत का छोटा भाई है। आज छोटा भाई बड़े भाई से धर्म, संस्कृति की रक्षा की दिशा में आगे निकल गया है।

सन् १९७० के दशक में जब भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी मॉरीशस आई थीं तब यहाँ भारतीय संस्कृति का साकार रूप देखकर इस देश को 'लघु भारत' की संज्ञा से अभिहित किया था। पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने इस देश को भारत का 'छोटा भाई' कहा।

पाठकवृन्द, विश्व में मॉरीशस ही एक ऐसा देश है, जहाँ भारत के समान ही चौबीसों घण्टे रेडियो-टेलीविजन पर हिन्दी भाषा गूँजती रहती है। प्रतिदिन रेडियो से धार्मिक सन्देश सुने जा सकते हैं। वेद-मन्त्रों की ध्वनि से सभी के कर्ण पवित्र होते रहते हैं। यह कृपा यहाँ की धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाओं की है।

पूरब दिशा का प्रकाश-स्तम्भ : गुरुवर पं० दीनदयाल बन्धन

सोनालाल नेमधारी, आर्य भूषण

गुरुवर पण्डित दीनदयाल बन्धन जी का निवास स्थान ब्रिजेवेरजियेर गाँव था। वे हिन्दी के कर्मठ प्रचारक और प्रसारक थे। हिन्दी के प्रति उनकी लगन बाहर निकलने को छटपटा रही थी। उन्हें क्षेत्र की तलाश थी। उनका गाँव तो था । चलते-चलते वे हमारे प्रान्त तक आ गये। सही भूमि उनके हाथ लग गयी। उन्हें साइकिल पर आते-ताजे देख सकते थे। मोटर-साइकिल का सहारा भी लेना पड़ा। दो-ढाई बजे के लगभग आते थे। दूसरे दिन नौ बजे के लगभग घर लौटते थे। यह सिलसिला प्रतिदिन का था। मौसम कोई रुकावट नहीं डाल सकता था। सागर किनारे के आस-पास बो शाँ में पहला कदम जमाया। जड़ लग गयी। पौधा बढ़ने लगा। डालियाँ निकलने लगीं। फूल और फल भी आने लगे। वहाँ से आगे बढ़े। एनेंस-फ्लोराँ में नन्दलाल भगत ने अपनी कसौटी पर सही पाया। बुद्धू परिवार से भी जानकारी बढ़ी। कार्य चल पड़ा। लोग जानने लगे, पहचानने लगे । सुगन्ध फैलने लगी। अनजान लोगों की खोज बढ़ने लगी। अता-पता मिला। सिलसिला चल पड़ा।

मेरे पिता जी को भी मेरे लिए एक गुरु की खोज थी। तब-तक वे बेल-एर तक आ गये थे। एक कमरा किराये पर ले रखा था। वहीं पर पाठ देते थे। जवान और गृहस्थी भी अपनी प्यास बुझाने लगे। उन्हें सन्तुष्टी मिलने लगी। रात्रि में उसी कमरे में रूखी-सूखी खाकर रात बिताते। कार्यक्षेत्र बढ़ने लगा। मेरे पिता जी ने मुझे उनके चरणों में सौंप दिया। इससे पहले प्राथमिक तक तो चलती रही। इससे आगे की सीमा पार करनी थी क्योंकि रेवड़ी अपनों में ही बाँटी जाने लगी। पारिवारिक दृष्टिकोण का कीड़ा दिमाग में रेंगने लगा। अध्यापक अपने कर्त्तव्य से नीचे गिरने लगा । हवन-यज्ञ सिखाने से हाथ खींचने लगे। तब बाहर की खोज आरम्भ करनी ही पड़ी, क्षितिज पार करना उन्हीं के चरणों में पड़कर आया ।

दो से चार बजे तक पाठ लेता और चार से छः बजे तक पेची शेमें की पौराणिक बैठक में बच्चों को पढ़ाने लगा। मास के अन्त में पन्द्रह रुपये की दक्षिणा हथेली पर रख दी जाती थी। इसी प्रकार पोंलारजे, दीप रिवर आदि गाँवों में भी सेवा कार्य चालू हो गया। केन्द्र बेल-एर ही था। पाठशाला खुलने लगी । कारोलिन समाज में सत्संग निमित्त भी कभी-कभी आ जाते थे। रिव्येर शेष गरमी में सूख जाती है। एक अवसर के सत्संग में बैठक की उपस्थिति सूखी मिली। विद्यार्थी शिकारी बन शिकार पर निकल गये। लोगों को शर्मिंदगी उठानी पड़ी।

गुरुजी बहुमुखी प्रतिभा के पोषक और प्रवर्त्तक थे। पढ़ाई का सिलसिला तो चल पड़ा। खर्च की चिन्ता भी सताने लगी। उन्हें वार्षिकोत्सव के महत्त्व का पूरा ज्ञान था। क्योंकि मॉरिशस के अन्य प्रान्तों में वार्षिकोत्सव की जागती परम्परा चल पड़ी थी। उसके लाभ से परिचित थे।

उन्होंने चाहा कि ऐसा प्रचलन इस प्रान्त के लोग भी अपनाएँ। कोशिश जारी रही। सभा-समाज में लोग जुटने लगे । चर्चा चल पड़ी । अनभिज्ञ लोगों से पाला पड़ गया था। वार्षिकोत्सव को कोई 'बासी कूसो' कहता और गलत उच्चारण कर बैठता। उस उत्सव में होता क्या है लोगों को समझाना टेढ़ी खीर था। माथा-पच्ची करनी पड़ी। कोई यह भी कह बैठता कि अच्छा होता लोगों को पूरी-तरकारी से सत्कार करते। क्या करें उनका क्या दोष। गाँव के वातावरण में यह प्रकाश उनके लिए नया था। धीरे-धीरे समझने लगे। कँधे से कँधा मिलाकर काम में जुट गये। उत्सव रचाया गया, भव्य पण्डाल पक्की सड़क के किनारे खड़ा हो गया। पाठशाला में बच्चों की तैयारी हुई। वार्षिकोत्सव की सुनहरी वेला आ गयी, विद्वानों का आगमन हुआ। सर्वश्री सोमदत्त बखोरी जी, पण्डित जगदत्त जी, श्री ठाकुर प्रसाद मिश्र जी और प्रान्त के श्री रामनारायण राय जी के अलावा और प्रतिष्ठित विद्वान् और सज्जन भी आये। पास-पड़ौस के गाँवों के लोग भी आमन्त्रण पाकर आने लगे। विशेष अतिथि भारतीय उच्चायुक्त विशेष स्वागत से पधारे। माता-पिता और बच्चों के परिवार उत्सुकता से पधारने लगे कि देखें तो वार्षिकोत्सव होता कैसे है? उससे पहले तो सिर्फ़ बच्चों के अलावा बड़ों को ही सुनते आते थे। कथा में, भागवत में और यज्ञ-हवन में। उन बच्चों को सुनने का अवसर था। बच्चों का भी भटक खुलने लगेगा। भारतीय उच्चायुक्त के आने पर राष्ट्रीय गान 'जन-गण-मन' से सभा आरम्भ की जाती थी। विद्यार्थीगण भी बारी-बारी से सिखाया गया पाठ, डरते-डरते बोलते। उनके अभिभावक बहुत खुश हो जाते थे। वातावरण सुनहरा हो जाता था। दो-ढाई घण्टे का कार्यक्रम होता था। अन्त में अपील की जाती थी। श्री ठाकुर प्रसाद मिश्र जी अपने नकली हाथ से असली काम करते थे। दान-दाताओं के नाम लिखते जाते थे।

ऐसा ही समारोह अन्य गाँवों में भी होने लगा।

गुरु जी ने अपने कमरे में ही 'हिन्दी प्रचारक मण्डल' नाम की संस्था खोल रखी थी। पत्र-व्यवहार भी होता था। भारतीय उच्चायोग की पत्रिकाएँ 'बाल भारती' और 'आजकल' भी उसी पते पर मेरे घर आती थीं। क्योंकि संस्था शाम को खुलती थी। डाकिया दिन में आता था।

हिन्दी का पठन-पाठन और परीक्षाओं तक ही उनका क्षेत्र नहीं था। अन्य क्षेत्र में भी उनके कदम बराबर बढ़ते गये थे। भारत के विद्वानों का मान-सम्मान करना और स्वागत समारोह का आयोजन भी करते थे। बेल-एर के लिबर्ती सिनेमा भवन में महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज के स्वागत की व्यवस्था भी की थी। पूरा भवन आस-पास के गाँवों के लोगों से भरा था। अच्छा प्रचार कार्य भी हुआ था। उन्हें सम्मान-पत्र देकर सम्मानित किया गया था। संस्कृत में प्रदान उस पत्र के रचयिता ठाकुर प्रसाद मिश्र जी थे। उनके नाम के वर्णमाला के क्रमिक आधार पर रचना की गयी थी। उस समय किसी का सम्मान इस तरीके से करवाना एक दिवा स्वप्न था। जो गुरु जी ने साकार किया था। ऐसा प्रचलन आज की बात है। हर जगह हर संस्था ऐसा करती है। वे कितने दूरदर्शी थे। कितने आगे बढ़े हुए थे। सोचने की बात हो जाती है। यह बात सन् चौवन-पचपन के लगभग की है। इसी सिनेमा घर में दीपावली महोत्सव भी मनाया गया था। उस अवसर पर दीवाली से सम्बन्धित एक लघु नाटक भी प्रस्तुत किया था।

उनका क्षेत्र सिर्फ़ साहित्यिक नहीं था, धार्मिक क्षेत्र भी था। परिचय परीक्षा का सम्बन्ध हिन्दी प्रचारिणी से था और विद्या विनोद, और विद्या रत्न आदि आर्य सभा मोरिशस से जुड़ा हुआ परीक्षा आर्यन वैदिक पाठशाला वाक्ता में होती थी। सुखू रामप्रसाद जी का ज़माना था। आर्य समाज से भी उनका अटूट सम्बन्ध था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायी थे। आर्यसभा से जुड़ी एक पाठशाला लावाँचीर गाँव में भी है। रामस्वरूप रामगति पाठशाला जंगलों के बीच एक आश्रम सा ही लगता था। वहाँ पर आपने एक भव्य आयोजन करवाया था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर एक श्रव्य नाटक मंचित किया था। नाटक सामने पेश करवाना तो मना ही था। परदे के पीछे से सिर्फ आवाज़ आती थी। पिता-पुत्र की बातचीत गुरु-शिष्य का वार्तालाप और विपदादा-जगन्नाथ से बातचीत अन्त में जगन्नाथ रोता हुआ, पछताता हुआ गीत गाते हुए महर्षि से पैसा लेकर जाता है। जायें तो जायें कहाँ...... । उस समारोह में प्रो० रामप्रकाश जी भी उपस्थित थे। बड़ी प्रशंसा की ।

समय की गाड़ी तो चलती जाती है, दौड़ती जाती है। आदमी को पटरी बदलनी पड़ती है । हिन्दी क्षेत्र से हटकर कुछ अन्य कामों की ओर उन्हें खिसकना पड़ा। शायद हिन्दी से रोजी-रोटी की आपूर्ति न हो पाती हो। दवाखाने में तिलक फार्मेसी में भी कार्यरत थे। रोगियों की सेवा से भी पीछे नहीं हटे। फिर हिन्दी और धार्मिक क्षेत्र से जुड़े ही रहे। ट्रेड यूनियन में भी कदम रखा। लोगों को संगठित करने में लगे थे। सफलता कहाँ तक मिली। वे ही जाने ।

जीवन है चलने का नाम। चलते-चलते आज वक्ता में पूरे परिवार के साथ जीवन-यापन कर रहे हैं। पूरे तौर से सामाजिक कार्यों में लगे हैं। आर्य सभा मॉरिशस के वरिष्ठ पण्डित हैं। आर्यसमाज के ज्यादातर कार्यों में उपस्थित रहते हैं। जागरुकता के मिसाल हैं। वैसे तो प्रचार में लगे ही रहते हैं, रेडियो कार्यक्रम में बराबर भाग लेते रहते हैं, अपने अनमोल विचारों से लोगों को प्रभावित करते रहते हैं। उनकी पुरानी क्षमता बराबर बनी हुई है। भेंट होने पर जान-पहचान वालों का समाचार लेते रहते हैं। कौन है या नहीं। हालचाल पूछते रहते हैं। प्रान्त के लोग भी उन्हें नहीं भूल पाये हैं। सत्तर से ऊपर पार किये लोग उनके बारे में मुझसे पूछते हैं, क्योंकि उनसे मेरा करीबी रिश्ता है। जब कभी भेंट हो जाती है, तो प्रोत्साहन देते हैं लिखने की प्रेरणा जागृत करते हैं। ऐसा लगता है कि मेरे लेख पढ़ते हैं। हिन्दी जगत् में पूर्वीय प्रान्त में जो काम उन्होंने किया। उसके बदले में उन्हें शायद बहुत कम ही मिल पाया है।उनके शिष्य उच्च कोटि के साहित्यकार हैं, लेखक हैं, समाज सेवक हैं। उनके छात्र सरकारी अध्यापक बन गये, मगर वे उस पद से वंचित ही रहे। मगर कभी-कभी ऐसा सोचना पड़ता है। वे उससे भी ऊपर चरम सीमा पर हैं। गुरु हैं, पण्डित हैं, प्रचारक हैं लाखों लोग उनसे प्रेरित हैं। वे एक मील के पत्थर हैं। जो भी वहाँ से गुजरेगा कुछ अवश्य सीखेगा। शायद जीवन के आठवें दशक में प्रवेश कर गये होंगे। शरीर जवाब देता होगा। पर मन की जो इच्छा है, जो साहस है, मन में जो उफान है, वह ऊर्जा आज भी बराबर है, ऐसा लगता है। जागरूक हैं, सोने वालों से दूर हैं। मानो चौबीसों घण्टे कार्यरत रहते हैं। मुझे ऐसा लगता है, हिन्दी जगत् में, साहित्य जगत में जो नाम मेरा है। उसका श्रेय गुरु जी को जाता है। मुझे मेरे जीवन में अच्छा और सच्चा गुरु मिला है । ऐसा मेरा मन कहता है। मेरा पूरा जीवन उनका आभारी है, और रहेगा ।

अतः पूर्वीय प्रान्त में हिन्दी के टिमटिमाते दीयों को प्रकाश स्तम्भ में परिवर्तित करने का श्रेय गुरु जी पण्डित दीनदयाल बन्धन को ही जाता है ।

परोपकारी पत्र - श्रावण शुक्ल २०७० / अगस्त द्वितीय २०१३

विष्णु आपाडू न रहे

एस. प्रीतम

विष्णुदेव कोन्दापा का जन्म १४ सितम्बर १९३७ में सावान ज़िले के शेमें ग्रेन्यें गाँव में हुआ था। पिता का नाम धर्ममित्र था जिसका भाई बलराम आपाडू आर्य सभा मोरिशस के पुरोहित थे। उस इलाक़े में पंडित काशीनाथ का बहुत अधिक प्रभाव था इसी लिए तो शामुनि गाँव में १९१६ ही में सदल बन्धुओं ने अपने गाँव के कुछ लोगों की सहायता से आर्यसमाज की स्थापना कर दी थी। शेमें ग्रेन्यें में शामुनि के बाद आर्यसमाज का जन्म हुआ। उसी समाज में पं० शाहज़ादा वेद प्रचारार्थ और हिन्दी अध्यापन के लिए ज़ाया करते थे। धर्म मित्र आर्य सभा के सक्रिय सेवक बनें। धर्म मित्र आर्यसमाज के हिन्दी प्रचार से प्रभावित थे इसलिए उसकी सुपुत्री प्रतिभा हमारे साथ १९६४ में हिन्दी अध्यापिका बन गई थी।

विष्णुदेव की प्रायमेरी शिक्षा गाँव की ही सरकारी पाठशाला में हुई थी। उसके बाद रोज़ हिल की माध्यमिक संस्था में पढ़ाई पूरी की और एस० सी० (स्कूल सर्टिफ़िकेट) का प्रमाण पत्र प्राप्त कर लिया जिसके बल पर बोबासें के प्रशिक्षण विद्यालय में भर्ती हुए। दो साल का प्रशिक्षण कोर्स पूरा करके सरकारी पाठशाला में लम्बे समय तक देश के विभिन्न पाठशालाओं में अध्यापन करते हुए तरक्की होती गई और अन्त में मुख्य अध्यापक बन गये। साठ साल बाद सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्त किया ।

विष्णु का विवाह सन् १९६३ में कुमारी देव्यानी गाजिली से हुआ। आपाडू दम्पति ने दो बच्चों को जन्म दिया। पहली संतान लड़की थी जिसका नाम रखा गया सुधा। लड़की के जन्म के १० वर्ष पश्चात् एक लड़के का मुँह देखने का भाग्य प्राप्त हुआ। उसका नाम रखा गया विकास। भाई-बहन दोनों विवाहित है। सुधा अपने बच्चों के साथ रेयून्यन टापू में रहती है । पति-पत्नी दोनों सेवारत हैं।

विष्णु आर्य समाजी परिवार में जन्में थे। इसलिए जन्म भर आर्यसमाज में ही रहकर सेवा प्रदान की। पति-पत्नी दोनों आर्यसमाज के आजीवन सदस्य रहे। वे दोनों पोर्ट लुईस आर्य समाज नम्बर १ के सदस्य रहे और रविवार के सत्संग में भाग लेते रहे।

विष्णु DAV College Committee में सक्रिय भाग लेते रहे और अपने अध्यापन का अनुभव बाँटते रहे। पुस्तक प्रेमी होने के कारण पोर्ट लुईस के डी०ए०वी० कोलिज को एक पूरा विश्व कोष दान में दिया था। आर्य सभा की जो लायब्रेरी थी उसके संचालानार्थ कमिटि थी न केवल उसके सदस्य रहे बल्कि पुस्तकाध्यक्ष भी रहे।

बाद में जीवन के संध्या काल में स्वास्थ्य गिरने लगा था, लेकिन थोड़ी सी लापरवाई बरतने लगे थे। स्वास्थ्य बिगड़ने लगा था। परिवार वालों के लाख कहने पर अस्पताल में सेवा सुश्रुषा के लिए जाने से इन्कार करते रहे। अन्त में जीतू अस्पताल में एक सोमवार को भर्ती कराया गया और गुरुवार की आधी रात को अन्तिम साँस ली और अगले दिन भारी जन समूह के बीच उनकी अर्थी उठाई गई। वहीं पोर्ट लुई त्रेंगबार की श्मशान भूमि में आर्य समाज के पंडित मोहरलाल रूपन ने वेद मंत्रों के साथ दाह क्रिया की।

इस प्रकार विष्णुदेव अपनी स्मृति छोड़कर हमारे बीच से विदा हुए।

FAMILY SOLIDARITY

(…Cntd from Aryodaye No 350 of 04-15 Jan 2017)

UN Secretary General, Ban Ki Moon reiterates the Vedic edicts during his 2016 visit to Mauritius. His reference to *'people living as if they have another planet earth on standby'* and overexploiting resources reminds us of the concept of aparigraha, a wake-up call to everybody to be diligent in the use of resources as well as non-hoarding, i.e. do not accumulate more-that-what-is-needed. His call on people to *'defy leadership'* hints at the *Manusmriti* which proclaims that we should challenge our own assumptions, review our course to always be on the track of virtue (*Dharma*) and sanction leaders who go astray from the mission of uplifting the physical, moral/spiritual and social standards of all.

Downfall due to the beggar's bowl attitude

A family where members are possessed with the beggar's bowl attitude never prospers. A beggar keeps very little of the alms received in his bowl because he lives in constant fear that as it starts filling, people will stop giving him alms. Likewise anyone with the beggar's bowl attitude lives with fear and as a self-seeker he cannot enjoy nor transmit harmony and solidarity. Instead we should be ever aware that the hands of the giver are always at a higher level than those of the receiver. **We shall construct a closely knitted family where each member lives a life of dignity only when we are anchored on the time-tested universal Vedic values, not as a one-off transaction but as part and parcel of day-to-day-living,** and …no skeletons in the cupboards.

Two aphorisms (*sutras*) for a prosperous life at all levels are :

Let it be *(koyi bāt nahin)*

God will do justice *(Ishvara nyāya karegā).*

Besides keeping conflicts at bay, these two sutras inspires us to keep the keys to personal peace-of-mind in our own hands. Such calm composure will be emulated by family members, friends and relatives. The multiplier effect would be better harmony and solidarity within the family, society and the world-at-large.

Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanāchārya
(Snātak - Darshan Yog Mahavidyālaya, Rojad, Gujarat, India)
Arya Sabha Mauritius
Tel: 212 2730; Cell: 5795-0220
Email : bmukundlall.arya@gmail.com

Bibliography :

PanchmahāyajnaVidhi, SanskāraVidhi, Satyārtha Prakāsha (Maharishi Dayānand Saraswati)
YogDarshanam (Maharishi Patanjali)

[Editorial Note: The above is, in essence, the address through a Power Point presentation at the International Arya Youth Conference at RDI, Pailles on 02.12.2016 in the context of the Arya Samaj Africa.]

RODRIGUES ARYA SAMAJ (Branch No. 474)

1. Request for Donations / Contributions

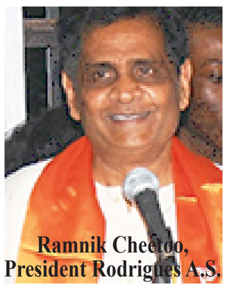
Ramnik Cheetoo, President Rodrigues A.S.

At its meeting of 14 January 2017 in Port Mathurin, the Rodrigues Arya Samaj resolved to raise funds for the purchase of a private van which would bear the name 'Rodrigues Arya Samaj'. The main purpose of the van would be to propagate the Universal values of Vedic Culture in Rodrigues. It would be also put at the disposal of the Mauritian and foreign Arya Samajists visiting Rodrigues. The list of the generous donors will be published in the weekly Aryodaye. You may deposit your contributions / donations to SBM bank or issue cheque on, RODRIGUES ARYA SAMAJ, **SBM** (Rodrigues), Ac/No. : 50300000006978

You are kindly requested to send a photocopy of your deposit counterfoil with your full name and address to the Secretary.

2. Celebrating the First Anniversary

The 1st Anniversary of Rodrigues Arya Samaj will be celebrated on Saturday 12 August 2017 at 5.00 p.m. in Port Mathurin in the presence of many eminent personalities from Mauritius and Rodrigues. Your esteemed presence with family and friends will be highly appreciated. For Hotel Accommodation, you may contact us on the following numbers.

We thank you for your usual support and generosity.

Ramnik Cheetoo	Shamina Leveque	Willina Etienne
Tel : 54431544	Tel: 58473572	Tel : 54910912

Astronomy Corner

Moon Phases 2017

AAMAVASYAS				POORNIMA			
New Moon		First Quarter		Full Moon		Third Quarter	
		5 Jan	23:46	12 Jan	15:33	20 Jan	02:13
28 Jan	04:07	4 Feb	08:18	11 Feb	04:32	18 Feb	23:33
26 Feb	18:58	5 Mar	15:32	12 Mar	18:53	20 Mar	19:58
28 Mar	06:57	3 Apr	22:39	11 Apr	10:08	19 Apr	13:56
26 Apr	16:16	3 May	06:46	11 May	01:42	19 May	04:32
25 May	23:44	1 Jun	16:42	9 Jun	17:09	17 Jun	15:32
24 Jun	06:30	1 Jul	04:51	9 Jul	08:06	16 Jul	23:25
23 Jul	13:45	30 Jul	19:23	7 Aug	22:10	15 Aug	05:14
21 Aug	22:30	29 Aug	12:12	6 Sep	11:02	13 Sep	10:24
20 Sep	09:29	28 Sep	06:53	5 Oct	22:40	12 Oct	16:25
19 Oct	23:12	28 Oct	02:22	4 Nov	09:22	11 Nov	00:36
18 Nov	15:42	26 Nov	21:02	3 Dec	19:46	10 Dec	11:51
18 Dec	10:30	26 Dec	13:20				

** All times are local time for Port Louis(Mauritius).*
Dates are based on the Gregorian calendar.

Pandit Gayasingh

From letters received from India, we are glad to learn that Pandit Gayasingh the well-known missionary of the Arya Pratinidhi Sabha who is now visiting India, has delivered a speech at the Indian National Congress which met last month at Haripura in the Gujarat State. The Pandit spoke with the help of the loud speaker. He spoke on the position of Indians in Mauritius. His speech was listened with rapt attention and it produced a good impression on the crowded audience. Many prominent Indian leaders were present.

Arya Vir, 25 March 1938
Contributed by Pahlad Ramsurrun

Words of the Vedas on the maintenance of a stable ecosystem and the conservation of biodiversity of our Planet

Ravindrasingh Gowd, Arya Bhushan

TRINI CHANDAMSI KAVAYO VIYETIRE, PURURUPAM DARSATAM
VISVACAKSANAM. APO VATA OSADHAYASTANI-EKASMIN
BHUVANA-ARPITANI

Atharva Veda. 18. 1. 17

Translation : The sages found that there are three things which are covering the entire universe. They have different forms and aspects. They are all – beholding. They are *water, air* and *plants*. These things are provided to every world.

The World Environment Day (WED) is celebrated every year on the 5th June to raise awareness for positive environmental activities to protect Mother Earth. Every year a new theme is chosen and adopted to sensitise the population on the status and various threats to our environment from climate change resulting in global warming and other natural catastrophes largely contributed by Man himself, such as increase in the level of the greenhouse gases, rise in atmospheric temprerature, pollution of air, water, and soil, deforestation, freshwater depletion, reduction in biodiversity, ozone layer depletion, sea water level rise, droughts, flash floods and so on and so forth. Global Warming and climate change with all their negative consequences have become a major concern for Man. The Vedas remind us of our moral and spiritual obligations to help sustain the Earth for the current and future generations.

The Vedas are of Divine origin and were revealed to Man for his upbringing and for his physical, spiritual and social development in harmony with Nature for a righteous living.

What the Veda Says :

Land pollution

Do not pollute the earth.

PRTHIVIM DRMHA,
PRTHIVIM MA HIMSIH.

Mait. S. 2. 8. 14

Translation : Always strengthen and nourish the earth. Do not pollute

Water pollution

Do not pollute water.

MA-APO HIMSIR, MA-OSADHIR
HIMSIH.

Yajur Ved . 6. 22

Translation : Do not pollute water and do not harm or cut the trees

Air pollution

Do not pollute the sky and the atmosphere.

DYAM MA LEKHIR,
ANTARIKSAM MA HIMSIH.

YV . 5. 43

Translation : Do not disturb the sky and do not pollute the atmosphere.

Deforestation

- Plants and herbs destroy pollution

UGRA YA VISA-DUSANIH.. OSADHIH

V.8. 7.10

Translation : The plants and herbs destroy poisonous effect of the atmosphere.

- Plants are also used as medicine namely saffron, ayyapanah and tulsi.

TAM IT SAMANAM VANINAS CA VIRUDHO
ANTARVATIS CA SUVATE CA VISVAHA

The plants and herbes emit the vital air called samana (oxygen) regularly.

Sam Veda 1824

Our planet is in peril. Therefore, let us all join hands together and take corrective measures to restore our forests otherwise human race will be at gateway of extinction. Prof Bruce Nelson of University of Southern California rightly said -- *"People who will not sustain trees will soon live in a world that will not sustain people"*.

The ill effects of global warming is at our doorstep. Should we keep on plundering the Earth for our own material benefits or make sure to protect it for our future generations?

Joseph Joubert said, *" We have received the world as an inheritance, no one has the right to destroy it but everyone has the duty to leave in and improved condition"*

Atharva Ved : *"O Mother Earth! Enrich me wisdom so that I should not damage or degrade you. Whatever I dig out, should quickly be covered with greenery".*

So brothers and sisters it is high time that we make our contribution to save our planet Earth by planting as many trees as possible and let us think GREEN.

सूर्य किरणों का स्वास्थ्य से संबंध –

डा० विनय सितिजोरी

वैदिक काल में भी सूर्य किरणों का उपयोग रोग निवारणार्थ होता था। इस पृथ्वी पर सबसे पहले भारतीय ऋषि-मुनियों ने ही सूर्य के रोग-नाशक एवं शक्तिवर्द्धक गुणों को भली-भाँती पहचाना। इस कथन का प्रमाण संसार के प्राचीनतम ग्रंथ वेद है जो सूर्य चिकित्सा के मंत्रों से ओत-प्रोत है।

अथर्ववेद (५/२/४१९) में सूर्य को शरीर का पालन कर्ता, राजयक्ष्मा और कुष्ठ रोगों को दूर करने वाला देवता कहा गया है।

ऋग्वेद ने भी कहा कि 'मिश्र' के समान प्रकाश देने वाले हैं 'सूर्य' आज आप उदित होते तथा ऊँचे आकाश में जाते समय मेरे हृदय रोग तथा पाँडु रोग (पीलिया) को नष्ट कीजिए । इसी प्रकार अथर्ववेद में गंडमाला रोग तथा पाँव, जानु, श्रोणि, कंधा, मस्तक, कपाल, हृदय आदि के रोगों को सूर्य-किरणों के द्वारा दूर करने का वर्णन है। उतर वैदिक काल में भारतीय लोग सूर्य के गुणों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने 'सौर-पुराण' की रचना कर डाली और 'सौर सम्प्रदाय' बनाया ।

सूर्य तथा प्राणी मात्र का आपस में घनिष्ठतम संबंध है। 'सूर्य आत्मा जगस्तस्युवस्य' यजुर्वेद व ऋग्वेद । सूर्य तो चल-अचल अथवा जड़ चेतन के प्राणात्मा है। सूर्य की ग्रर्मी से प्रकृति की शुद्धि होती है। सूर्य अपनी किरणों से पृथ्वी के कीटाणुओं का नाश करते हैं और रोगों का हरण करते हैं। सूर्य की किरणें जीवनी शक्ति बढ़ाती है और स्नायु दुर्बलता दूर करती है। पाचन और मल निष्कासन की क्रियाओं को बल देती है। जठराग्नि प्रदीप्त करती है। खूब की गति देकर गर्म और शुद्ध करती है। मांशपेशियों को सुदृढ़ करती है। हड्डियों को मज़बूत करती है।

सूर्य चिकित्सा का जितना अच्छा वर्णन वेदों में मिलता है वैसा कहीं और नहीं मिल सकता । जैसे – 'सूर्य कृणोसु भेषजम' अथर्ववेद – सूर्य औषध बनाओ।

उदय होते हुए सूर्य का नियमित सेवन तो हृदय रोग, मस्तिष्क विकार व अनेक बीमारियों को नष्ट करता है। सूर्य किरण विष नाशक है। सूर्य किरण तो औषधियाँ है। मनुष्य के लिए सभी उपयोगी तत्व सूर्य किरणों में मौजूद हैं।

सूर्य किरणों की यही उपयोगिता वैदिक काल में लोगों को भली-भाँति परिचित थी और प्राकृतिक चिकित्सा में उनका उपयोग रोगनिवारणार्थ करते थे। यह वेदों में उपरोक्त अवतरणों से और सूर्योपासना के मंत्रों से स्पष्ट हो जाता है।